शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

# बिहार के लोकतत्व

रोशन कुमार (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
बी.आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय
मुजफ्फपुर,बिहार, भारत

## शोध संक्षेप

*लोक नाट्य लोकजीवन की समस्त इच्छाओं और आकांक्षाओं का सांकेतिक प्रकटीकरण है। उसका पट बड़ा ही विशाल,वस्तुतः समस्त चराचर जगत ही इन नाटकों का क्षेत्र है। जनजीवन की असंख्य भाव भावचेष्टाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने का यह सशक्त साधन है। इसमें लोक परम्पराओं और लोकरूढियों का खुलकर प्रस्तुतीकरण होता है। भारत के भिन्न भागों में अनेक प्रकार के लोक नाट्य प्रचलित है। दक्षिण भारत के 'यक्षगान' और 'वीथि नाटकम्' महाराष्ट्र के तमाशा और 'ललित' पूर्वी भारत के 'जात्रा' और 'गम्भीर' ,गुजरात के 'भवाई' और 'कठपुतली' उत्तर भारत के 'नौटंकी''स्वाग''भगत''रासलीला' और 'रामलीला' इसके उदारण हैं।अगर बिहार की बात करें तो 'जट-जटिन' , 'डोमकछ' , 'समा-चकेवा' , 'भूकली-बंका' , 'विदेशियाँ' , 'कीर्तनियाँ' , 'विदापत नाच' प्रमुख है। प्रस्तुत शोध पत्र में बिहार के लोक तत्व की चर्चा की गयी है।*

## प्रस्तावना

'लोक' शब्द संस्कृत के 'लोकृ दर्शने' धातु में धञ् प्रत्यय जोड़ने से निष्पन हुआ है। इस धातु का अर्थ है - देखना। इसका लट् लकार में अन्य पुरूष एकवचन रूप 'लोकते' होता है अत: 'लोक' शब्द का मूल अर्थ हुआ - देखने वाला। अत:'लोक' शब्द का अर्थ उस सम्पूर्ण जनसमुदाय से है,जो इस कार्य को करता है।1 डॉ. रवीन्द्र भ्रमर 'लोक' शब्द की व्याख्या करते हुए लिखते है -"इस शब्द के प्रचलित अर्थ दो हैं-एक तो विश्व अथवा समाज दूसरा जनसामान्य अथवा जनसाधारण। साहित्य अथवा संस्कृति के एक विशिष्ट भेद की ओर इंगित करने वाले एक आधुनिक विशेषण के रूप में इस शब्द का अर्थ ग्राम्य या जनपदीय समझा जाता है;किन्तु इस दृष्टि से केवल गाँवों में ही नहीं वरन् नगरों,जंगलों पहाड़ों और टापुओं में बसा हुआ वह मानव समाज जो अपने परम्परा-प्रथित रीति-रिवाज और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने के कारण अशिक्षित या अल्प सभ्य कहा जाता है, 'लोक' का प्रतिनिधित्व करता है।2" हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'लोक' की व्याख्या इस प्रकार की है -"'लोक' शब्द का अर्थ 'जनपद'या 'ग्राम्य' नहीं है बल्कि नगरों और ग्रामों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है।3" डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने यह मत प्रकट किया कि जो लोग संस्कृत या परिष्कृत वर्ग से प्रभावित न होकर अपनी पुरातन स्थितियों में ही रहते है ,वे 'लोक' है।4 लोक साहित्य में मर्मज्ञ डॉ. सत्येन्द्र 'लोक' की परिभाषा के संदर्भ में लिखते है- "लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।5 शब्दकोश में 'लोक' शब्द का अर्थ है- स्थान विशेष जिसका बोध प्राणी हो, संसार, प्रदेश, जन या लोग, समाज, प्राणी ,यश।

नाटक के मूल में 'नट्' धातु है। इस 'नट्' धातु में 'ण्वुल्' प्रत्यय एवं 'अक' आदेश करने से नाटक शब्द बनता है। भरतकोश में नाटक की

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

परिभाषा इस प्रकार दी गई है -'जो नटों द्वारा प्रदर्शित हो।'धनञ्जय ने 'अवस्था के अनुरण 6 को ही नाटक कहा है। भरत मुनि ने लिखा है 'अनेक भावों और अवस्थाओं से युक्त नाटक मुख्यत:लोकवृत का अनुकरण ही है।7 भारतेन्दु के अनुसार -नाटक 'नट लोगों की क्रिया 8 है। नाटक उसे कहते है जिसमें आंगिक, वाचिक,आहार्य और सात्त्विक अभिनयों द्वारा भावों का प्रदर्शन हो।

लोक और नाट्य दो शब्दों से लोकनाट्य शब्द बना है। डॉ. श्याम परमार के अनुसार "लोकनाट्य से तात्पर्य नाटक के उस रूप से है जिसका सम्बन्ध विशिष्ट क्षितिज समाज से भिन्न सर्वसाधारण के जीवन से हो और जो परम्परा से अपने-अपने क्षेत्र के जनसमुदाय के मनोरंजन का साधन रहा हो।9 डॉ. नगेन्द्र ने लोकनाट्य में लोकवार्ता तत्व की प्राधनता पर बल देते हुए उसे इस प्रकार परिभाषित किया है-"लोकनाट्य सामूहिक आवश्यकताओं और प्रेरणाओं के कारण निर्मित होने से लोककथाओं,लोकविश्वास और लोकत्तवों को समेटे चलता है जीवन का प्रतिनिधित्व करता है।10 डॉ. श्रीराम वर्मा -"लोक धर्मी रूढ़ियों की अनुकरणात्मक अभिव्यक्तियों का वह नाट्य-रूप ,जो अपने-अपनेक्षेत्रके लोकमानस को आह्लादित,उल्लासित एवं अनुप्राणित करता है,लोकनाट्य कहलाता है।11 डॉ. महेन्द्र भानावत के अनुसार - "लोकनाट्य के मूल में अनुकरण और नकल की जबरदस्त प्रवृति रही है जब-जब इस प्रवृति ने तीव्रता और त्वरा धारण की तब-तब लोकनाट्यों का वेग बढ़ता है।12 उक्त परिभाषाओं के आधार पर लोकनाट्य की सामान्य विशेषता निम्न हो सकती है-

* कथानक की दृष्टि से इसमें लोक जीवन में प्रचलित घटनाएँ ली जाती है। जिनमें सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताओं को प्रधानता दी जाती है।
* इसके पात्र जिस समाज एवं वातावरण में पलते हैं,उसका प्रतिनिधित्व करते है।
* लोकनाट्य की भाषा काव्यात्मक होती है।
* लोकनाटकों का महत्वपूर्ण अंग लोक रंगमंच है।यह रंग प्राय: खुले मैदान में एक दो तख्त डालकर बना लिया जाता है।
* सहजता और सरलता लोकनाट्यों का सबसे बड़ा गुण है।

भारत के विभिन्न भागों में अनेक प्रकार के लोकनाट्य प्रचलित है दक्षिण भारत के 'यक्षगान' और 'वीथि नाटकम्' महाराष्ट्र के तमाशा और 'ललित' पूर्वी भारत के 'जात्रा' और 'गम्भीर',गुजरात के 'भवाई' और 'कठपुतली' उत्तर भारत के 'नौटंकी''स्वाग''भगत''रासलीला' और 'रामलीला' इसके उदारण हैं। अगर बिहार की बात करें तो 'जट-जटिन' , 'डोमकछ' , 'समा-चकेवा' , 'भूकली-बंका' , 'विदेशियाँ' , 'कीर्तनियाँ' , 'विदापत नाच' प्रमुख है।

## बिहार के लोक तत्त्व

**जट-जटिन**- इसे 'जाट-जाटिन' भी कहते है। यह बिहार का बहु प्रचलित लोक-नाट्य है। इसका प्रचलन प्राय:सारे बिहार में है,लेकिन उत्तर बिहार में स्त्री समाज के मनोरंजन का यह प्रमुख साधन है। इसका अभिनय सावन के महीने से लेकर कार्त्तिक महीने की शुभ्र चाँदनी रातों में होता है। इसमें केवल स्त्रियाँ ही भाग लेती है। जट और जटिन का अभिनय कुमारी लड़कियाँ ही करती है। जट को दुल्हे की पोशाक पहनाई जाती है तथा जटिन को रंगीन साड़ी और कुमुदनी के फूलों से आकर्षक ढंग से सजाया जाता है। दोनों दल की स्त्रियाँ पक्तिबबद्ध आमने-सामने करीब पाँच-छह हाथ के फासले पर खड़ी रहती है। अभिनय के समय एक दल गाता हुआ दूसरे दल के पास आता है और उलटे पाँ लौट जाता है। जट का दल खड़ा होकर तथा जटिन का दल पहले खड़ा होकर ,फिर झुककर गाता है। जट-जटिन को दोनों दल अपने पीछे छिपाए रहते है।

सबसे पहले सहगान होता है,उसके बाद अभिनय आरंभ होता है। इनकी कथा जट-जटिन के दाम्पत्य जीवन पर आधारित है।विवाह के बाद जट को जटिन के चरित्र पर शंका होती है,

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

जिसका निवारण वह अपने प्रेम-व्यवहार से करती है।जट जटिन के विरोध के बावजूद चुपके से विदेश चला जाता है।जटिन पति के वियोग में विकल हो उसे ढूँढ़ने चलती है। राह में जमीदार, पुलिस,दारोगा, सुनार आदि उसे अपने साथ चलने का प्रलोभन देते है,लेकिन वह किसी के बहकावे में नहीं आती। विदेश से लौटने पर साधारण वाद-विवाद में जट-जटिन को मार बैठता है। जटिन कहीं जाकर छिप जाती है। जट उसे ढूँढ़ने निकलता है। वह ग्वालिन,गोढ़िन,चूड़िहार आदि का रूप धारण कर अपनी प्रियतम को ढूँढ़ते हुए -"आँगन में दुभिया जनमि गेल गे माई,जटिन बनु" का प्रलाप करता है। जटिन प्रकट होती है और उसे लेकर वह घर लौटता है। इस लोक-नाट्य से ग्रामीण जीवन का अच्छा परिचय मिलता है।इसमें व्यवहृत उपमान ठेठ ग्रामीण है।इसमें पद्य के साथ-साथ गद्य का प्रयोग होता है।

जट - जाय दहि आगै जटिन, देश रे बिदेसा
तोहरा लय लयबो जटिन सेनुरा सनेस।।
जटिन - सेनुरा जे थिकय जटा , मंगिया के धूर
धरहिं में रहु जट्टा,नयनाक हजुर।।

**डोमकछ -** इसका अभिनय लड़के के विवाह के समय होता है। परिवार के सभी पुरूष विवाह में चले जाते हैं। घर में स्त्रियाँ ही रह जाती हैं। चोरों के भय से स्त्रियाँ रात भर जगकर इसका अभिनय करती हैं। स्त्रियाँ पुरूषों के कपडे पहनकर पुरूषों का अभिनय करती हैं। इसके मुख्य पात्र हैं - जलुआ, पुलिस, दारोगा,अनारकली ,डोमिनआदि।कभी-कभी इसमें सामयिक प्रसंगो को भी जोड़ा दिया जाता है।

**सामा-चकेवा -** सामा-चकेवा (श्यामा-चकेवा) का अभिनय कार्तिक शुक्ल सप्तमी से पूर्णिमा तक होता है। इसके अभिनय में स्पष्टतया कथोपकथन तो नहीं होता,परंतु सामूहिक रूप से गाए जाने वाले गीतों में प्रश्नोत्तर चलते रहते हैं। इसके पात्र जो मिट्टी के बने होते हैं, लड़कियों के माध्यम से अभिनय में भाग लेते हैं। इसमें अभिनय, गीत औरनृत्य का समन्वय रहता है। इसके पात्र श्यामा और चकेवा भाई-बहन हैं। इसके अतिरिक्त सतभइया, चुंगला, खिड़रिच, बनतीतर, झांझी कुत्ता, वृंदावन, ऐठला-ऐंठली, मुहटेड़ी, बटदेखनी, ग्वालिन, हाथी आदि प्रमुख पात्र हैं। भगवान श्री कृष्ण की पुत्री श्यामा (सामा) और पुत्र शाम्भ के बीच स्नेह पर आधारित यह पर्व आज भी खासकर मिथिलांचल में पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है। श्यामा ऋषि कुमार चारू दत्त से ब्याही गई थी। श्यामा का घूमने में मन लगता था। श्यामा रात में अपनी दासी डिहुली के साथ वृन्दावन में भ्रमण करने के लिए और ऋषि मुनियों की सेवा करने उनके आश्रम में जाया करती थी। इस बात की जानकारी डिहुली के द्वारा भगवान श्री कृष्ण के दुष्ट स्वभाव के मंत्री चुड़क को लग गई। उसे यह नहीं भाता था। उसने राजा को श्यामा के ख़िलाफ़ कान भरना शुरु कर दिया। क्रोधित होकर भगवान श्री कृष्ण ने श्यामा को वन में विचरण करने वाली पक्षी बन जाने का शाप दे दिया। श्यामा को पंछी रूप में देख कर उसका पति चारूदत्त ने भी भगवान महादेव की पूजा-अर्चना कर उन्हें प्रसन्न कर स्वयं भी पक्षी का रूप प्राप्त कर लिया।

श्यामा के भाई और भगवान श्री कृष्ण के पुत्र शाम्भ अपने बहन-बहनोई की इस दशा से मर्माहत हुआ। बहन-बहनोई के उद्धार के लिए उसने अपने ही पिता श्री कृष्ण की आराधना शुरू की। उसकी आराधना से प्रसन्न हुए भगवान श्री कृष्ण। उन्होंने शाम्भ से वरदान मांगने को कहा। तब पुत्र शाम्भ ने अपनी बहन-बहनोई को मानव

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

रूप में वापस लाने का वरदान मांगा। तब जाकर भगवान श्री कृष्ण को पूरी सच्चाई का पता लगा। उन्होंने श्यामा के शाप-मुक्ति का उपाय बताते हुए कहा कि श्यामा रूपी सामा एवं चारूदत्त रूपी चकेवा की मूर्ति बनाकर उनके गीत गाए जाएं और चुड़क की मूर्ति बनाकर चुड़क की कारगुजारीयों को उजागर किया जाए तो दोनों पुनः अपने पुराने स्वरूप को प्राप्त कर सकेंगे और साथ ही श्री कृष्ण ने प्रसन्न होकर नौ दिनों के लिए बहन को उसके पास आने का वरदान दिया। जनश्रुति के अनुसार सामा-चकेवा पक्षी की जोड़ीयां मिथिला में प्रवास करने पहुंच गई थीं। भाई शाम्भ भी उसे खोजते हुए मिथिला पहुंचे और वहां की महिलाओं से अपने बहन-बहनोई को शाप से मुक्त करने के लिए सामा-चकेवा का खेल खेलने का आग्रह किया। उनके आग्रह को मिथिला की महिलाओं ने माना और इस प्रकार शाम्भ ने बहन-बहनोई का उद्धार किया। सामा ने उसी दिन से अपने भाई की दीर्घ आयु की कामना लेकर बहनों को पूजा करने का आशीर्वाद दिया। ऐसा माना जाता है कि द्वापर युग से आज तक इस खेल का आयोजन होता आ रहा है।

**भकूली-बंका -** इसका अभिनय प्राय: जट-जटिन के साथ ही होता है,लेकिन कहीं-कहीं इसका स्वतंत्र रूप भी प्रचलित है। इसके अभिनय का समय और साज-सज्जा जट-जटिन के सदृश ही है। इसके प्रमुख पात्र है-अंका ,बंका, दीदी, टिहुली और भकुली। भकुली अपनी तीनों बहनों में छोटी है,जिसका विवाह बंका से होता है। वह कुछ दिनों में अपनी ससुराल के वातावरण में धुल मिल जाती है।कुछ दिनों के बाद बंका को भकुली के चरित्र पर संदेह होता है। भकुली रूठकर अपने पिता के घर चली जाती है। वह पति के परिवार के लोगों के मनाने पर नहीं लौटती पर अपने यार के साथ वापस आ जाती है। पति के घर उसकी उपेक्षा होने लगती है और वह फिर अपने पिता के घर चली जाती है।

दीदी - अगे आबय छौ अंगना, अंग मोयर के चल रे भकुली।

भकुली - की करबय दीदियों, मौग मेहरा छय गे दीदियो।

दीदी - अगे भकुली,भैंसुरा आबय चौ अंगना,घोघ तायन केचल गे भकुली।

भकुली - की करबय दीदियों घर घुसका छयगे दीदियों।

**विदेशियाँ -** यह उत्तर प्रदेश एवं बिहार राज्यों के भोजपुरी भाषी क्षेत्र का एक प्रमुख एवं ग्रामीण जनता में सर्वाधिक प्रचलित लोक-नाट्य है। इसमें नाटक और संगीत दोनों तत्व उबरकर सामने आते है। नृत्य और संगीत से समन्वित इस लोक नाट्य को अमलीजामा देकर भिखारी ठाकुर ने अनेक पीढ़ियों की जनता का मनोरंजन किया। विदेशियाँ मुख्यता: एक लोककथा है जो नायक के प्रवास जाने पर नायिका की करूण और दैनीय दशा का चित्रण करती है। इसका प्रारंभ प्राय: भवानी भैया की प्रार्थना से होता है। विदेशियाँ के कथानक में प्रवासी पति के विक्षोभ की करूण व्यथा के साथ-साथ इसमें अनेक सामाजिक कुप्रथाओं पर व्यंग के लिए भी अवकाश बन जाता है। बिहार के सुदूर गाँव के युवक कमाई करने के लिए कलकत्ते आदि नगरों में प्रवास किया करते थे।पीछे घर में उनकी पत्नियाँ गरीबी और अभाव के बीच संयुक्त परिवार की विसंगतियाँ झेलती हुई उनके लौटने की प्रतीक्षा करते रहती है। इसी जीवनी प्रसंग को कथात्मक रूप देते हुए विदेशियाँ लोक नाट्य की योजना हुई है।

**कीर्तनियाँ -** मिथिला जनपद के नृत्य प्रधान नाट्यों में कीर्तनियाँ उल्लेखनीय है। इस लोकनाट्य में धार्मिक भाव प्रधान रूप से कार्य करती है। कीर्तन शब्द भगवान के गुणगान के लिए ही प्रयुक्त होता है और यह लोकनाट्य कीर्तन पर ही आधारित है। नेपाल दरबार की परम्पराओं से प्रभावित होने के कारण दरभंगा के महे ठाकुर ने कीर्तनियाँ लोकनाट्य को बहुत

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

प्रश्रय दिया ; प्रचार-प्रसार कराया। नाटक के अभिनय के पूर्व इसमें पात्रों का परिचय करने की परम्परा भी दिखाई पड़ती है।श्रीकृष्ण या शिव-शंकर से संबंद्ध विभिन्न पौराणिक कथाओं को गाथा के रूप में ग्रहण करते हुए उन्हें के आधार पर इसमें नाटकीय प्रस्तुत की जाती है। वर्तमान समय में अब इसमें देवी के कथा-प्रसंगों को भी ग्रहण किया जाने लगा है।

**विदापत नाच** - विदापत नाच कोसी की महत्वपूर्ण लोकनाट्य है।विदापत नाच जयदेव और विद्यापति की पदावली पर आधारित लोकनाट्य है। विदापत नाच में प्राय:किसान और मजदूर वर्ग के लोग होते है-अधिकतर अनुसूचित जाति के। इसमें मंच का विधान मुक्ताकाशी होता है। अन्य लोक नाटकों की तरह ही इस नाट्य-रूप की शक्ति इसका संगीत पक्ष ही है। मुख्य गायक 'मूलगाईन' कहलाता है और उसके साथियों को 'समाजी' कहा जाता है। इसमें एक बिकटा(विदूषक) होता है। इस लोक नाट्य का आरंभ विद्यापति रचित भगवती वंदना से होती है इसी कारण इसका नाम 'पदापत नाच' पड़ा। वंदना समाप्त हो जाने के बाद बिकटा पात्रों का परिचय करता है तथा इस बीच में हँसी मजाक भी होता है। इसके बाद राधा अपने सखी के संग आती है और रास नृत्य प्रस्तुत करती है।रास के उपरांत नारद,कृष्ण ,रूकमणी आदि अपना अभिनय प्रस्तुत करते हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ

*1 शर्मा डॉ. श्रीराम, लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग, पृ. 1*
*2 भ्रमर डॉ. रवीन्द्र, हिन्दी भक्ति-साहित्य में लोकतत्व पृ. 3,*
*3 द्विवेदी हजारी प्रसाद,जनपद वर्ष1 अंक 1पृ. 65*
*4 उपाध्याय डॉ.कृष्णदेव,हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास (षोडश भाग)पृ.-4*
*5 डॉ. सत्येन्द्र,लोक साहित्य विज्ञान पृ.-3*
*6 धनञ्जय-दशरूपक,प्रथम प्रकाश*
*7 भरतमुनि,नाट्यशास्त्र 112*
*8 भारतेन्दु ,नाटकावली भाग 2 पृ. 421*
*9 परमार डॉ.श्याम,लोकधर्मी नाट्य परम्परा पृ.31-32*
*10 डॉ. नगेन्द्र सं. भारतीय नाट्य साहित्य पृ.84*
*11 शर्मा, श्रीराम, लोक नाट्य परम्परा और प्रवृतियाँ पृ. 3*
*12 भानावत डॉ. महेन्द्र, लोक नाट्य परम्परा और प्रवृत्तियाँ*